मंतर (मंत्र)

मंत्र आर मंतर एके सबदेक दु रूप हे । मंत्र 'रूप संस्कृत शिष्ट साहित में आर ओकरे तत्सम रूप हिन्दी साहित्य में प्रयुक्त हे। मंतर सबद लोक साहितेक रूप लागे। एकर में अचकचायेक बात नाञ हे, नजइर गबचाय के देखल से ई बात साफ फुरछा हे।

'मंत्र' संस्कृत में हे जकर पर ब्राह्मण सभेक अधिकार हे। ओखिन छाड़ा दोसर कोय नाञ ओकरा पइढ़ सकहे किम्बा जइप सकहे। पुरानेक कथा (पौरानिक कथा) में एकर रूप पावल गेल हे। वैदिक साहितेक आदिग्रंथ त्रग्वेद कर श्लोक बा त्रचा के मंत्र कहल गेल हे। आइझो ब्राह्मण सभे पूजा–पाठ, यज्ञ, हवन हेनतेने मंत्र करे पाठ कर हथ। 'ऊँ गणेशाय नमः', 'ऊँ नमो शिवाय' ई सब मंत्र संस्कृत में हे आर ओकरे तत्सम रूप हिन्दी साहितों में आइल हे।

'मंतर' लोकभासाक सबद लागे बा 'मंत्र' सबदकर तदभव इया अपभ्रंश रूप लागे। इया 'त्र' के 'तर' लिखेक रूप हे। मगुर नजइर गबचाय के बुझले साफ फुरछाय जा हे, मेनेक 'मंतर' कर जे रूप अथवा अर्थे लोक साहितेक प्रकीर्ण विधाञ पावल जाहे ओकर से साफ झलके हे।

'मंतर' लोकभासाञ अथवा आम लोकेक बोली रूपे पावल जाहे इयानि मंतर एगो विद्या लागे जकरा गाँवेक अनपढुवा लोके रइट के सस्वर रूपे इयाद कर हथ आर 'सिद्वि' लेल बादही इया पूरा पारंगत हेल बाद्ही ऊ 'गुरू' बइन सकहे। ई विद्याक (गियानेक) उपयोग आइझो नजइर गुचावेक, भूत–प्रेत भगवेक, डाइनेक मंतर काटेक, साँप–बिच्छुक बिख (विष) झारे में करल जा हे।

ई रूप भारतेक हर छेतरे हर लोक भासाञ पावल जाहे चाहे ऊ भासा जनजातीय हे इया गैर जनजातीय काहे कि जनजातीय संस्कीरतिक ई एगो अंग लागे ओहे हाल गैर जनजातीय बोली हूँ ई पावल जाहे काहे कि ई ओकर लोक संस्कीरतिक अंग लागे।

झारखंडेक हर छेतरेक हर भासाञ् एकर रूप पावल जाहे आर एकर इस्ट देवी मनसा के मानल गेल हे। अइसे कहीं काली तो कहीं कामरू–कामाख्या के मानल गेल हे। जे देबी दुर्गा (शक्ति) करे रूप मानल जा हे। से खातिर मनसाक संगे संग सरस्वती, पारवती, दुर्गा, काली, कामरू–कामाख्या करो नाम लेइके पाठ करल जाहे, दोहाय करल जाहे गाँवेक देवी करो दोहाय करल जाहे। पाठ करवइया एकर काम करेक आगु, देवी–देवताक सोहाय कइर के आपन गात बांध हे, कुल्ही/डहर/खोइर बांध हे, गाँव घार बांध हे, तब जाइ के साँप/बिछुक बिख झार हे। ई सब कामे रूप दलीय (समवेत) रूप हेव हे।

मंत्र आर मंतर में अंतर

1. 'मंत्र' पर ब्राह्मण सभेक अधिकार हे, जबकि मंतर पर गाँवेक लोक के अधिकार हे, एकर में जाइतेक काँटा (अवरोध) नाञ हे।
2. मंत्र पूजा–पाठ हवन, यज्ञ हेनतेने आइझो संस्कृत रूपे में हे आर एहे रूपे गोटे संसारे परचल हे। जबकि 'मंतर' टोना–टोटका,भूत–प्रेत–डाइन–भूत आर साँप–बिच्छुक बिख झारेक हेनतेने आइझ भारतेक हर कोनाक लोकभासाञ पावल जाहे।
3. 'मंत्र' के आर्य संस्कीरतिक रूप मान हथ तो मंतर के अनार्य संस्कीरतिक रूप मान हथ मकुर ई लोक संस्कीरतिक रूप लागे।
4. 'मंत्र' के लिपिबद्ध करलो बादे एकर पाठ शिक्षित वर्ग, ब्राह्मण वर्गे पइढ़ सकहे जबकि 'मंतर' लिपिद्ध नाञ करल गेल हे, एकरा मौखिक रूपे सस्वर पाठ रइट के इयाइद

करल जाहे इयानि ई पीढी–दर–पीढी लोक कंठे चलल बा परचल–पसरल आइल हे। से ले ई अनपढ़/समाज बा वर्ग कर अंग हे।

5. मंत्रेक पाठ ब्राह्मण छोइड़ के दोसर खातिर मनाही (निषिद्ध) हे इयानि ऊ प्रभाव हीन हे ओइसने 'मंतर' जे आइझ काइल लोक साहिते लिखाय रहल हे, ऊ प्रभावहीन हे। काहे कि बिना साधना आर सिद्धि के फल (परिणाम) नाञ मिलहे। ई लोक माइनता हे।

मंतरेक भेद

लोक साहिते बा खोरठा लोकसाहितें बा खोरठा छेतरे मंतर जे रूपे पावा हे,ऊ हे मउखिक (मौखिक) आर ई लोकेक मन–मँगजे बा कंठे बसल हे। ई बात सही हे कि सोब कोय मंतर नाञ जाने। मंतर सीखल जाहे। ओझा–गुनी–भगत–भगताइन, मंतर सीखल लोकें मंतर जान हे।

खोरठा छेतरे मंतर दु किसिमेक पावा हे–

1. सूत्र रूपे मंतर आर 2.गीत रूपे मंतर

सूत्र रूपेक मंतर :– अइसन मंतर के गुनी आपने मुँहेक भीतरे बुदबुदाइल नीयर पढ़ हे आर फूक मार हे। अइसन मंतर खास कइरके भूत भगवे, नजइर गुचवे, हुक लागल के भगवे में पढ़ल जाहे।

गीत रूपेक मंतर :– अइसन मंतर के दल बाँइध के गीत रूपे राग लगाय के गावल जाहे। साँपेक बिख झारेक बेराञ गावल जाहे। एकरा बिसहरी मंतर कहल जाहे।सांपेक बिख गुचवेक बेराञ बिसहरी मंतर गीत रूपे गावल जाहे। अइसन मंतर के ओझा–गुनी दल बनाइ के राग–सुरे गावहथ,संगे–संग सांप काटल ठावें मेंजुर पाइखें झारले जाहो। लोक बिसुआस हे जे अइसन मंतर से सांपेक बिख झइर (गुइच) जा हे।

मंतरेक बिसेसता

मंतरें हेठे लिखल बिसेसता पावल जाहे–

1. मंतरें लोक साहितेक (प्रकीर्ण साहितेक) एगो विद्या लागे।
2. मंतरें भासा लोकभासा हेवहे।
3. मंतरें लोक संस्कीरतिक, लोक बिसुआस आर लोक आस्थाक भाव भरल रहे हे।
4. मंतरेक इस्ट देवी मनसा, काली, कामरू–कामाख्या लागथ जे देवी शक्ति दुर्गा करे रूप लागे। एकर संगे सरस्वती करो अराधना करल जाहे।
5. मंतरें गुरूक माइन पावल जाहे।
6. मंतर सीखे खातिर चेला के गुरु घार जाय पड़ हे।
7. मंतर के गुरु–चेला समवेत सस्वर पाठ कर हथ। लयबद्ध स्वरे रइल जाहे।
8. मंतर सीखल बादे चेला के सिध लेवे पड़ हे।
9. मंतर लिपिवद्ध रूपे नाञ पावल जाहे। हाँ, आब सिलेबसे आइल कर चलते एकरा लिपिबद्ध करल जाय रहल हे। मगुर लिपिबद्ध मंतर प्रभावहीन हेव हे।
10. मंतर सिखवइया चेला प्राइ गाँवेक अनपढ़ हेवहथ।पढ़ल–लिखल लोके एकरा काना पतियारी (अंधविश्वास) मान हथ।
11. मंतर सिखवइया लोक पाठाक (बकराक बा चेनगाक) बलि दे हथ।
12. मंतर सिखवइया लोकें छुआछुतेक भाव नाञ पावल जाहे।
13. मंतर पइढ़ के फूक मारल जाहे। मंतर पइढ़ के सइरसा (सरसों) के चेथराञ बाइध के गातेक कोनों अंगे बा पींधेक चीजें डंडकडोइर बा सिंकरीञ बा करिया सुताञा बांधल जाहे।

मंतरेक असर (प्रभाव)

मंतरेक असर अदमी ठीन की रकम हेवहे आर एकर की ओजह (कारण हे,) एकर पर दु रकमेक मत हे– (1) विज्ञान विचार धाराक मत आर (2) आस्था विचार धाराक मत।

विज्ञान विचार धाराक मतें एक असर मनोवैज्ञानिक हे। एकर असर ओकर पर बेसी हेवहे, जे अनपढ़, गँवार हे आर जकर बुद्धि क्षमता कटि कम हे। एखिन मंतर के विज्ञानेक कसउटीञ कसेक कोरनिस कर हथ।

आस्था विचार धाराक मते मंतरेक असरें देवी–देवताक दोहाय हे। एखिन के देवी–देवता, भगवान पर बिसुआस हे आर ई लोक बिसुआस के कोनो कउसटीञ नाञ कसल जाय पारे आर ना कोनो तरकेक तराजुञ् तउलल जाय पारे।

नाञ तो ई कधिये सिराइल रहतल, ई नीयर ई आदिपरिया (आदिकाल) से एखनेक परिया (वर्त्तमान) काल तइक नाञ चलल आव तल।

हाँ, ई बात सच हे, जे अदमी भूत–प्रेत देखल हे ओकर असर आँइखें देखल हे ओकरा मंतर पर बिसुआस जरूर हे। अक्सराहाँ, अदमी के हुक लाइग जाहे तो ओकरा मंतरे से झारल देखल जाहे। एकर में कोन मनोविज्ञानिकता हे, ई तो समझ से परे हे। भूत धारल पर मंतरे से भगवल जाहे, ई सब पढ़ल–लिखल लोको देखल हथ, गाँवेक बा सहरेक लोकों देखल हथ कतेक सिनेमाउ बनल हे, भले ओकर में मनोविज्ञानिक डॉक्टर आर ओझा गुनीक दुइयोक रूप देखवल जाहे।

पटतइर रूपे कुछ मंतर

बंदना

1. शिव–सती लछ भंडारे, उत्तर कोना पट भंडारे
   भरिया बोने झनक काली, धूपे सर्वोकाली
   आब विद्या दे भंडारे, तोहरा साजे कुस्टेक भार
   हामके साजे विद्या भार।
   से ई विद्या बड़ा सर्वकाल, माँ मनसा चरन बन्दे
   कोटि कोटि देवता के नमस्कार, माँ मनसा दोहाय।
2. ए माँ सरस्वती, कंठे बासा मोर
   तोहरे परताप से विद्या बड़ा सर्वोकार
   माँ मनसा चरण बन्दे
   कोटि कोटि देवता के नमस्कार, माँ मनसा दोहाय।
3. आलंची–मालंची, तीन फूले पूजा करी
   हे माँइ मनसा, तोञा ले फूलेक भार
   हमरा दे माँइ विद्याक भार।
   ई विद्याक लागोक माँ सदाइ सर्वकाल
   ककर दोहाइ, माँइ मनसाक दोहाइ।

गुरु प्रणाम मंत्र

जगाहूँ गुरु, जगाहूँ चेला, अठारह गंडा
मंतर जगवो सोलह गंडा, ढाबांय जगावो हो
राह चलवे हो गुरु बाप, भेटे करि लिहा गुरु बाप

बात करि लिहा हो गुरु बाप, माँ मनसा के दोहाय।

कुल्ही (खोइर) बांधेक मंतर

हाटे गुरु, बाटे चेला, बाँइध दिहा हो
एते राइते चेला चाँड़
डाइनेक संगे जदि भेटा होइ
संभारियो हो गुरु बाप, सिद्ध गुरु, ठनका–ठुमकू
कामरू गुरु दोहाय, माँइ मनसा के दोहाय।

गाँव–भूँइय बाँधेक मंतर

बाँधो–बाँधो असल हाँथी, बाँधो चामर कोन जुड़िये भाय
फलना गाँवेक माँटी बाँधो, बेस–बेस गुनी हथ
गुनीयारेक गुन बाँधो, नेतुवारेक ताल बाँधो
खोदाय मंतुर चतुर खेदो, लाइ लस्कर ताँय बाँधो
काने कुंडल जोगी बाँधो, के बाँधे, गुरु बाँधे
गुरु–गियाने हाम बाँधो, काट रेंग्गा माँइ चंडी
गुरु के दोहाय, गुरु के दोहाय, माँइ मनसा के दोहाय।

आपन गात बांधेक (आत्म सुरक्षा) मंतर

1. हाट चलते हाट बाँधो, बाट चलते बाँट बाँधो
सोब छउवा गात बाँधो, के बांधे ? गुरु बाँधे
गुरु गियाने हाम बाँधों, हामर बाँधल रही जा
बारह महीना, तेरह जुग, गुरु बाबाक दोहाय।
2. पुरूब चलते पुरूब बाँधो, पछिम चलते पछिम बाँधो
उत्तर चलते उत्तर बाँधो, दखिन चलते दखिन बाँधो
आपन गात बाँधो, चउसठो जोगिन बाँधो
भूत बाँधो, प्रेत बाँधो, कुदरा बाँधो, कुदरी बाँधो
किचिन बाँधों, डाकिन बाँधो, भूत–मसान बाँधो
सिरी बड़ावीर नर सिम्हा कामरू कामाख्या के दोहाय।
3. जग बाँधो, जन्तर बाँधो, बाँधो आपन काया रे
हाँक चलते हाँक बाँधो, डाक चलते डाक बाँधो
प्रेत चलते प्रेत बाँधो, भुवाँ चलते भुवाँ बाँधो
दारा चलते दारा बाँधो, कुदरा चलते कुदरा बाँधो
डाइन चलते डाइन बाँधो, घारेक देवा छोइड़के
बाहरेक देवा सबके बाँधो, के बाँधे, गुरु बाँधे
गुरु गियाने हाम बाँधो, हामरे बाँधल रइह जा
बारह महीना, तेरह जुग, राजा रामचन्दर
गुरु बाबा के दोहाय।
4. अजरे सिकल बजरे बाँधो, बजरे बाँधो दस दुवाइर
दस–दस के सागर बाँधो, सरगे राजा इन्दर बाँधो
पाताले बासुकी बाँधो, दहिने बाँधो मेधेकाल, बाँवे

बाँधो करिया तुफान, कहीरे केवांर बाँधो, इ विद्या
डाइन बाँधो, खँट ही दना बाँधो।
ई बजर के बाँधो
गुरु बाँधे, गुरु अंगियाय हाम बाँधो,
ककर दोहाय, माँ कामरू–कामाख्या के दोहाय।

कटान –

आयेसु बाँये भूत, हाम चलेक काली भूत
दोहाय माँइ काली।

सांप बिस गुचवेक मंतर

1. जने–तने भुलले गे नागिनि, सापिनि
काइट ले लें बिन दोसें, समाइ देलें बिस हो
काले काटलें नागिनि, कोन दोसे काटलें
गोटे दुनिआइ करले हइरान
ना रे नागिनि, ना रे सापिनि, ना काटबे मानुसें हों
माइ मनसा के दोहाय।
2. मेघ अंधारे गउरारातिं, ना जानि संपा कोन कोन जाति
जाति चिति, लोइ बिलाती, सोनचिति, धमनाचिति, पहार चिति
आठ नाम, नौ बेड़ा, सियार चंदा, लंका अठारो जाति
उपरे झारों काल काटल बिख, हेठे नाभे
देवी मांइ मनसा के दोहाय।
3. मंत्र सदा सिसिर खेदा, झारबो आप मोने
जकर उपर चढ़लो बिस झारबो हाम झारबो कइसे
ऊ आवे एक सदा नटवर, हरल–गरल बिस पानी भइजा
माँय मनसा के दोहाय

कटान मंत्रः–मंतर पूरल बादे इयानि बिख झरल बादे कटान मंतर पढ़ल जाहे ताकि ओकर असर सिराय जाय। से खातिर गुनी सब आखरीञ कटान मंतर पढ़ हथ। अरिया काटो, सड़िया काटो

ससान काटो, मसान काटो
डाइन काटो, जोगिन काटो
भूत काटो, पिचास काटो
जाजोव काटो, लागान काटो
नेघन काटो, डेंगन काटो
लागान काटो, बाझान काटो
के काटे, गुरु आग्यां हाम काटो
ककर दोहाइ, गुरु बाबा दोहाय।

नजइर–गुजइर छोड़वेक मंतर

तीन सइरसा तेरो राइ
हरेक गले मसाने छाइ
डाइनिक मंतर राइ–छाइ
हामर मंतर आगू जाइ

जे पठइबे तकरा खाइ
दोहाय माँय मनसा के,
दोहाय माँय काली के।

भूत–भगवेक मंतर

धरम गुरु महाशिव
हाम बाँधो चाइरो दीप
गुनिया के गुन बाँधो
ओझा के ओझाई बाँधो
आपन काया उचित माया
मुंडे पाग बाँधो। दोहाइ माय मनसा
दोहाइ माँय काली

भूत बांधेक मंतर

भूत बाँधो भूतानी बाँधो
बाँधो भूतेक बेटी के
आठ हाँथेक पिरथिवी बाँधो
के बाँधे, इसवर बाँधो
गुरु अगियाँ हाम बाँधो
बाँधो सिरी बड़ा वीर
नरसिंह गुरुक दोहाय,
माँय मनसाक दोहाय।

अधकपारी झारेक मंतर

सूरूज उठे लगनी, हाम बइठे फलनी
फलनी के अधकपारी, कारनी के फारनी के
बोलो राम–सीता सूरूज के दोहाय

हूक लागल के छोड़ावेक मंतर

बाँच बाँस लामपुर, ताँहि ढूकल पाम चोर
भाग–भाग रे हुक चोर, कार दोहाय, महादेव दोहाय।

कटान :– 1.वाण–वाण जलिलेन वाण,
लोहार बेटाक घरेक वाण,
मार–मार बाच्छा एक सौ हजार वाण,
तोरी वाण होतो वाण
जे भेजे सोब बाण, ताकेय खा,
दोहाय माँ काली।

उउउ